एक दिन लखीमपुर में उन्होंने अपने साथी अण्णा जी वैद्य से एक डिब्बा लाने को कहा।
''पंडित जी ये तो आपके प्रमाण पत्र हैं। आपके उज्ज्वल यष के साक्षी।''
''इस डिब्बे में से एक पत्र निकाल लेता हूँ। अब इसमें षेश कागज आप जला दिजिए।''
''मैंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया है। इसलिए अब इन अनुषंसा पत्रों की मुझे आवष्यकता नही हैं।